E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact : 8.678

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I

अ. वि. मंडल द्वारा संचालित, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय द्वारा का

स. ह. चौधरी कला, श्री. गो. पटेल वाणिज्य एवं बा. भ. जा. पटेल विज्ञान महाविद्यालय, तलोदा,

जि. नंदुरबार महाराष्ट्र

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं

उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

12 मार्च 2023

आज़ादी के 75 वर्ष के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएँ

संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे
महासचिव
उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

अतिथि संपादक
प्रोफेसर संजयकुमार शर्मा
अध्यक्ष
उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

Chief Editor :
Dr. Girish S. Koli

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I SJIF Impact- 5.67

Index

S.No	Title of the Paper & Author's Name	Pg.No
1	हिंदी ग़ज़ल-साहित्य की कालजयी रचना - साये में धूप--डॉ. मधु खराटे	05
2	आज़ादी के 75 वर्ष के हिंदी साहित्य की कालजयी रचनाएँ- डॉ.अमिता एल. टंडेल	08
3	कालजयी उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में नारी विमर्श–डॉ.जिजाबराव पाटील	11
4	कालजयी नाटक – 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नइ' - प्रो.संजयकुमार शर्मा	14
5	स्वातंत्र्योत्तर कालजयी रचना मृगनयनी-- डॉ.सुनीति आचार्य	18
6	"पानी के प्राचीर " में व्यक्त ऑचलिकता एवं प्रगतिशीलता के उभरते तथ्य: आजादी के 75 वर्ष के परिप्रेक्ष्य में -- प्राचार्य डॉ.एन.एन.गायकवाड	20
7	"अस्तित्व की तलाश में सिमरन" उपन्यास में वैचारिक संघर्ष--प्रा.डॉ .महेश वसंतराव गांगुर्डे	22
8	दूसरी औरत की पीडा का दस्तावेज : 'अपने अपने चेहरे'- प्रा. डॉ. अशोक शामराव मराठे	26
9	अंबेडकरी समाज को नई प्रेरणा देनेवाला नाटक- 'मंदिर से अस्पताल'-- प्रा.डॉ.गौतम कुवर	29
10	' कितने पाकिस्तान ' की सार्थक परिणति - घर वापसी-- प्रोफेसर राजेश भामरे	32
11	नारी पीडा एवं व्यथा की अभिव्यक्ति-नरेन्द्र मोहन कृत लम्बी कविता ' प्रिय बहिणा ' - प्रोफेसर डॉ.संजय ढोडरे	36
12	"प्रभा खेतान के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारीसंबंधी विचार"-डॉ. आर. के. जाधव	39
13	कालजयी उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' में किन्नर विमर्श- डॉ.सुनीता नारायणराव कावळे	42
14	'बाबू झोलानाथ' व्यंग्य-संग्रह में कालजयी सामाजिक कथ्य- प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार	45
15	हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त - वृद्ध विमर्श- प्रा. डॉ. अश्फाक इब्राहिम सिकलगर	48
16	मीना अग्रवाल के कहानी संग्रह में सामाजिक चिंतन ('पागल लडकी मुनीरा' के विशेष संदर्भ में) --प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील	51
17	कुमार अंबुज की कविताओं में बाजारवाद --डॉ. सुनील मुरलीधर पाटिल	53
18	हिंदी की कालजयी रचना 'शोषितनामा' मे दलित चित्रण --डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	55
19	'ल्हासा का चाँद' कालजयी उपन्यास-- डॉ. दिनानाथ मुरलीधर पाटील / प्रो. डॉ. संजयकुमार शर्मा	58
20	हिन्दी साहित्य की कालजयी रचना 'रागदरबारी'--डॉ.विजय एकनाथ सोनजे	62
21	ज्ञानप्रकाश विवेक का कालजयी ग़ज़ल-संग्रह 'धूप के हस्ताक्षर'– डॉ. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	65
22	आदिवासी संतकवि शंकर महाराज की कालजयी रचना – 'अभंग रामायण'- प्रो.डॉ.संजयकुमार नन्दलाल शर्मा / प्रा.बंसीलाल सजन भामरे	68
23	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में मानवी मानसिकता का चित्रण--डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन	70
24	व्यवस्था,सत्ता और व्यक्ति के बीच संघर्ष को उभारती नरेन्द्र मोहन कृत लम्बी कविता "खुशबू , परछाई और शमिला इरोम" -- डॉ.सुनील वळवी / प्रोफेसर डॉ.संजय ढोडरे	73
25	फणीश्वरनाथ रेणु की कालजयी रचना : 'मैला आँचल'--डॉ. अमृत खाडपे	77
26	प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा की कालजयी यथार्थ को उजागर करनेवाली कहानियाँ (यथार्थवादी कहानियाँ) -- शिल्पा कुलदिपसिंग पाटील / डॉ. योगेश गोकुळ पाटील	79
27	डॉ. दामोदर खडसे का कालजयी उपन्यास 'भगदड' प्रो. डॉ. संजयकुमार शर्मा /डॉ. जसपालसिंग वळवी	81
28	कालजयी कृति – 'सायें में धूप' -- प्रो. कल्पना पाटील	84
29	कालजयी रचना दुष्यंतकुमार कृत उपन्यास 'आँगन में एक वृक्ष'- प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे	88
30	'कामायनी' में मानव संस्कृति के विविध रूप-- डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण	91
31	स्त्री 'अस्तित्व' की तलाश करता कालजयी काव्य ('अपने घर की तलाश' काव्य के संदर्भ में) प्रा.अविनाश अहिरे	94
32	आचार्य भगवत दुबे के नवगीतों में प्रकृति चित्रण-- रोकड़े करुणा प्रताप	96

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.67
March 2023 Special Issue 08 Volume I

07

'अस्तित्व की तलाश' में सिमरन उपन्यास में वैचारिक संघर्ष

प्रा.डॉ.महेश वसंतराव गांगुर्डे
कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय अक्कलकुवा

शोध सार :" अस्तित्व की तलाश में सिमरन "यह उपन्यास डॉ मोनिका देवी द्वारा रचित मौलिक कृति है जिसमें समाज के तीसरा पक्ष कहे जाने वाले किन्नरों के जीवन को यथार्थ के धरातल पर शब्द देकर उकेरा गया हैं इनके जीवन के छुए व अन छुए पहलुओं की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए यह उपन्यास सार्थक सिद्ध हुआ हैं!

शब्द : किन्नर विमर्श, हिजड़ा,

आलेख : जीवन की विषमताओं की भुक्तभोगी के रूप में सिमरन कहती है- "किन्नर का जीवन सरल नहीं होता, जीते भी हैं रो-रोकर। आंसू ही सहारा बन जाते हैं, लेकिन अपना कहने के लिए कोई हाथ आगे नहीं बढ़ता।"1

किन्नर सिमरन का जीवन भी अपवाद नहीं है। नर किन्नर के रूप में जन्मा 'शत्रोहन' (शत्रु का नाश करने वाला) माता-पिता की प्रथम संतान होने के कारण असीम प्यार-दुलार में नर और नारी दोनों दृष्टियों से उसके अपूर्ण शरीर- जैविक विकलांगता की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया तथापि उसकी विशिष्ट चाल, स्त्रियोचित रुचियां - श्रृंगार, गृह कार्य, मर्दानी आवाज़ उसे सामान्य से पृथक कर देती थी। किन्नरों की भीख मांगती टोली, उनकी वेशभूषा एवं हावभाव, लड़कों की भीड़ द्वारा उन्हें छक्का कहकर चिढ़ाना उसकी बाल बुद्धि से परे था। उनके प्रति उसकी जिज्ञासा का समाधान किसी ने नहीं किया और वह उसके मन में घुमड़ती रही। आठ वर्ष की अल्पायु में ही अपने साथियों, सहपाठियों आदि की कुत्सित दृष्टि व व्यवहार; मामू, छक्का आदि संबोधनों और स्वयं में उभरते लक्षणों के कारण वह यह जानने के लिए बेचैन होता है कि वास्तव में वह कौन है? नर-नारी अथवा दोनों दृष्टियों से अधूरी देहयष्टि वाला किन्नर? अपनी बीमारी में उसे ग्रह कार्यों को सुरुचिपूर्ण ढंग से निबटाते देख मां उत्फुल्ल हो उसे बेटी संबोधन देने के लिए तो तैयार थी किंतु लड़कियों की तरह कपड़े पहनने, लंबे बाल रखने, श्रृंगार प्रसाधनों का प्रयोग करने की अनुमति देने के लिए नहीं।

किन्नर रूप में जन्मे बालक को सर्वप्रथम अपने परिवार द्वारा विस्थापित किए जाने का दंश भोगना पड़ता है। शारीरिक विकलांगता से युक्त संतान की चिकित्सा के लिए अपार संपत्ति व्यय करने तथा सभी संभावित प्रयास करने वाले माता-पिता अपने स्वाभिमान, मर्यादा और सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए निर्ममतापूर्वक उसे त्याग देते हैं। जन्मते ही बैरंग लौटाने, किसी निर्जन स्थान या झाड़ी-नाले-गटर में फेंक आने, किसी किन्नर समूह को सौंप देने के सभी संभावित तरीके अपनाने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होता। यह सब तब और भयानक लगता है जब उस मासूम नवजात को अपनी स्थिति का कोई बोध ही नहीं होता। सिमरन को प्रारंभ में अपने पैतृक घर से अलग नहीं होना पड़ा। वह शत्रोहन नामधारी बालक के रूप में बड़ा होता रहा। उसे लड़कों की वेशभूषा पहनाई जाती थी। उसके माता-पिता उसकी जैविक विकलांगता से अनभिज्ञ थे या फिर जानकर उसको नजरअंदाज करते रहे। सिमरन के अपने प्रति किए गए दूसरे व्यक्तियों के दुर्व्यवहार संबंधी प्रश्नों का उत्तर मां नहीं देती थीं और पिता उसकी बात सुनना ही नहीं चाहते थे। वे उसके शरीर और हाव-भाव में उभरते लक्षणों से संभवतः उसकी अपूर्णता को समझ गए थे अतः स्वयं उसके प्रश्नों को अनसुना करने के अतिरिक्त वे उसे किसी अन्य से भी उस विषय या घटना को साझा करने से मना करते थे। मां-पिता तथा छोटे भाई-बहनों से असीम प्रेम होने के कारण सिमरन परिवार में मिलने वाले तिरस्कार और प्रताड़ना को सहती रहती थी। छोटे भाई आवारा, दुष्ट और उत्पाती थे। मां सिलाई का काम करने के बाद भी पर्याप्त न कमा सकने से कर्ज लेने की आदी थीं और काम छूटने, पीने-पिलाने के आदी पिता का लाड़ अब मारपीट में बदल चुका था। बड़ी संतान होने के कारण सिमरन सब के प्रति स्वयं को उत्तरदायी मानती थी। उसने अपने साथ होने वाले अमानुषिक व्यवहार को बार-बार झेला। परिवार के साथ रहते हुए घोर आर्थिक विपन्नता सहनी पड़ी। उसके पिता ठाणे (महाराष्ट्र) की एक दवा की कंपनी में मशीन ऑपरेटर का काम करने के साथ-साथ सदस्यों के अपने परिवार की गाड़ी चलाने के लिए नाश्ते की एक छोटी सी दुकान चलाते थे। मां भी सिलाई का काम करती थी। हड़ताल के कारण पिता की नौकरी छूट गई। नाश्ते की दुकान तथा माता की सिलाई के काम से घर का खर्च न चलने से सिमरन को अल्पायु में एक कंपनी में काम करने के साथ लॉन की घास काटने, घरों की सफाई और बर्तन मांजने, माला गूंथने का काम करना पड़ा किंतु फिर भी घर की स्थिति जर्जर ही बनी रही। कम्पनी में काम करते हुए वह किन्नरों और समलैंगिकों के संपर्क में आई जिससे उसे किन्नरों की सहायतार्थ सक्रिय 'हमसफर ट्रस्ट' तथा 'उजेफा ' संस्थाओं के अंतर्गत एड्स के प्रति जागरूकता अभियान में कुछ दिन काम मिल गया किंतु वह भी स्थायी नहीं रहा। काम छूटने पर पिता और भाइयों ने उसे बुरी तरह मारा-पीटा ही नहीं घर से भी निकाल दिया था। अर्थ लोभी मां उससे केवल पैसों के लिए संबंध रखती थी। धनार्जन के लिए उसे गलत तरीके से पैसे कमाने के लिए भी प्रोत्साहित करती रही। समय-समय पर अपनी बीमारी और अत्यावश्यक

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I SJIF Impact- 5.67

काम का बहाना कर उससे पैसे मांग लेती थीं किंतु लौटाने का वचन देने के बाद भी कभी लौटाती नहीं थीं। इतना ही नहीं उसके घर जाकर आत्महत्या करने की धमकी तक दे देती थीं। घर से निकाले जाने पर दर-दर भटकते समय बीमार होने पर या बलिया में रहते हुए गांव का घर देने का प्रस्ताव करने पर वे कन्नी काट लेती थीं। मां की निर्ममता सिमरन के मन की अस्तित्व की शंका को उभारती है। अपनी मां को अन्य लोगों की मांओं की अपेक्षा ममत्वहीन पाकर वह हिल जाती है किंतु उससे, पिता और भाई से स्वयं को काट नहीं पाती। एकाकी क्षणों में उनकी स्मृति उसे विह्वल कर देती है। "जब मां के साथ थी मां लड़ती ही रहती थी। भाई का मारना-पीटना, तिरस्कार करना। सब कुछ इसलिए बर्दाश्त किया क्योंकि वे मेरे अपने थे।"2

उपन्यास में अभिभावकों को अन्त तक आर्थिक सहायता देते रहने और उनके संपर्क के लिए तरसते रहने का प्रसंग अतिश्योक्तिपूर्ण और अस्वाभाविक है। प्रायः सभी प्रसंगों में इनकी पुनरावृत्ति खटकती है।

किन्नरों का जीवन घोर अर्थाभाव में व्यतीत होता है। बधाई गाने के अतिरिक्त रेल के डिब्बे, चौराहों पर भिक्षा मांगना, देह व्यापार में संलग्न होना आदि उनके जीवित रहने की अनिवार्यता बन जाते हैं। किन्नर गुरुओं द्वारा भी उन्हें इन कार्यों के लिए विवश किया जाता है क्योंकि उनकी कमाई का चौथाई अंश वे अपने लिए ले लेते हैं। इस विषय में सिमरन की स्पष्टोक्ति से उसकी पीड़ा ज्ञात होती है। "हम किन्नर पाई-पाई को तरसते हैं। आर्थिक रूप से भी शोषण होता है। जब तक पैसे पास होते हैं तब तक हर रिश्ता हमसे जुड़ना चाहता है। जब रुपया खत्म हो जाता है तब जिंदगी तमाशा बन जाती है। कोई भी आकर हमें गाली- गलौज देकर निकल सकता है।"3

सिमरन की गुरू बेला उसकी रुग्णावस्था और आर्थिक विपन्नता से अवगत होते हुए भी प्रति माह पांच हजार रुपये लेने में संकोच नहीं करती। दिवाली मांगने जाने पर अधेड़ावस्था का दुकानदार कुछ देता नहीं पर चिड़चिड़ाता जरूर है। "तुम लोगों को कौन पैदा करता है। किसलिए पैदा हो गए। कमाकर तो खाते नहीं हो। मुंह उठाकर मांगने चल देते हो।"4इन लोगों पर कोई सहजता से विश्वास भी नहीं करता और कोई इन्हें अपने घर में नौकरी भी नहीं देता।किन्नर घर से विस्थापित किए जाने का दंश तो भोगते ही हैं समाज भी इन्हें अपनी मुख्यधारा से काटकर हाशिए पर रहने को विवश कर देता है। किसी निर्जन, अनजाने स्थान पर अपनी पृथक बस्ती में छोटे-छोटे कमरों में अपने जैसों और गुरु के साथ अपनी ही मान्यताओं और विश्वासों में जीता यह वर्ग अपने विषय में किसी को कुछ नहीं बताता। जिस समाज ने उसे बहिष्कृत कर दिया हो उसे ही वह अपना हमदर्द कैसे समझ सकता है? वास्तविकता तो यह है कि उन्हें अपने ही समाज में अपेक्षित संरक्षण नहीं मिलता। उनके लिए गुरु का शिष्यत्व स्वीकारना अनिवार्य होता है पर कई बार उनका व्यवहार भी औदार्य रहित रहता है। चंपा गुरु सिमरन को भीख मांगने का धंधा प्रारंभ कराती हैं तो बेला गुरु शराब पीकर उसे मारती-पीटती और उसका आर्थिक शोषण करती हैं तथापि कुछ सौहार्द्रपूर्ण किन्नर भी होते हैं। नगमा, शिल्पा, सुभद्रा आदि के प्रति सिमरन कृतज्ञता ज्ञापित करती है। समाज के लिए किन्नर

यौनिक तनाव दूर करने का सर्वाधिक सहज उपलब्ध प्राणी होते हैं। सिमरन शैशवावस्था में अपने सहपाठियों और खेल के साथियों के दुर्व्यवहार का शिकार होती है। दुकान पर बैठते हुए उसके पिता के व्यस्क मित्र उसका यौन शोषण करते हैं। उनके जघन्य कृत तथा उनके द्वारा लगाए गए मिथ्यारोप से अवगत पिता अर्थाभाव में दुकान चलाने की विवशता के कारण खून का घूंट पीकर चुप रह जाते थे। मां से भी सांत्वना के स्थान पर निर्ममता से की जाने वाली पिटाई उसे हतोत्साहित करती है।

उत्तर प्रदेश में भी बाजे वाले, टेंट वाले जिनके पास भी वह घर मांगने जाती है वे उससे 'हम बिस्तर' होने की मांग करते हैं। "अब सबसे बड़ी समस्या सिर पर छत की हो गई।जिससे भी बात करती वही कहता घर मिल जाएगा लेकिन मुझे तू क्या देगी। इसे तू क्या देगी का मतलब सीधा-सा है। उनका हम बिस्तर बनना। जो मुझे कतई मंजूर नहीं था।"5

लोग उनसे यौन तृप्ति के लिए संपर्क रखते हैं किंतु उनसे विवाह कर घर बसाने की कल्पना तक नहीं करते। राजवीर जिसे सिमरन ने विपत्ति में सहारा और संरक्षण दिया था और जिसने कभी उसका हमसफर होने का दम भरा था अंततः उससे इसलिए संबंध तोड़ लेता है क्योंकि उसे संतान चाहिए थी जबकि सिमरन प्रजनन में असमर्थ थी। सामान्य स्त्रियों की भांति पुरुष संसर्ग और मातृत्व की आकांक्षा होते हुए भी देह के अधूरेपन के कारण उसके मन प्राण अतृप्त रह जाते हैं। वह कहती है- "बाहर की दुनिया में हम जैसों को सिर्फ एक सामान समझा जाता है जिसका उपयोग करके फेंक दिया जाता है। लोग अपना तनाव दूर करने के लिए हमारे पास आते हैं और रात के कुछ घंटे बिताकर चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि किन्नरों के अरमान नहीं होते, इच्छाएं नहीं होती। सब कुछ होता है लेकिन कोई किन्नर के साथ विवाह करके घर नहीं बसाना चाहता।"6

यह निर्विवाद है कि यदि किन्नर बालकों को सामान्य बच्चों की भांति विधिवत भेदभाव रहित शिक्षा दी जाए जिससे वे अपना व्यवसाय कर सकें, उन्हें सरकारी नौकरियां मिल जाए तो वे निश्चित ही सामान्य व्यक्तियों के समान या उनसे अधिक सफल हो सकते हैं। इस दृष्टि से किया गया सर्वेक्षण भी सिद्ध करता है कि अनेक किन्नरों ने राजनीति, समाज, साहित्य, डॉक्टर और कानून इत्यादि क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है तथा आज प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत रहते हुए सम्मानीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। स्कूल-कॉलेजों में

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.67
March 2023 Special Issue 08 Volume I

भी इनके लिए स्थान आरक्षित होते हैं। शौचालय, पुस्तकालयों, मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था होती है। स्वयं भी किन्नर छात्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे हैं तथा अनेक संस्थाओं 'कम आउट', 'क्राइ' आदि द्वारा अपनी बात दूसरों से साझा कर रहे हैं।

सिमरन को शिक्षण संस्थानों में भी भेदभाव का सामना करना पड़ा। उसके लिए बैठने के लिए कोई स्थान नहीं था। वह घर से बोरा ले जाकर गढ्ढेदार कच्ची जमीन में अपने बैठने का प्रबंध करती थी। साथियों का व्यवहार भी अभद्र होता था। दूसरी कक्षा से ही उसे उनकी कुत्सित दृष्टि का सामना करना पड़ा था जिससे उसके मन में दूसरों से किसी तरह भिन्न होने की शंका उमड़ने-घुमड़ने लगी थी। शिक्षा के प्रति रुचि और कुशाग्र बुद्धि होने पर भी परिवार की आर्थिक विपन्नता ने उसके आगे बढ़ते कदमों में बेड़ियां डाल दी। नौवीं कक्षा में एक बार अनुत्तीर्ण होने के बाद वह कठोर परिश्रम, मिस जोशी और मिस कुलकर्णी जैसे अध्यापकों तथा कुछ संवेदनशील सहपाठियों के सहयोग से दूसरी बार अच्छे अंकों में उत्तीर्ण हुई। परायी कृपा और आर्थिक सहायता पर आश्रित रहना उसके आत्मसम्मान को स्वीकार ना था अतः अपने परिश्रम से आगे बढ़ने का संकल्प कर वह स्वयं को जीवन के प्रतिक्षण परिवर्तित होती स्थितियों के झंझावात में छोड़ देती है।

शिक्षा प्राप्ति की ललक उसके अंतर्मन में निरंतर बनी रहती है। सोशल मीडिया के संपर्क ने उसे जीवन के नवीन आयामों से परिचित कराया। प्रबुद्ध व्यक्तियों के संपर्क ने शिक्षा के प्रति उसे पुनः उन्मुख किया। उसने अपनी छूटी शिक्षा का दामन पुनः पकड़ा और मौलिक लिखने का प्रयास किया। वृंदावन शोध संस्थान ने उसके आलेख को पुरस्कृत कर तथा मंच पर सम्मानित कर उसे प्रोत्साहित किया। पटना की गीता तथा 'आकांक्षा' संस्था की ममता के सद्भावना पूर्ण सहयोग से वह सकारात्मक जीवन की डगर पर चल पड़ी। वह झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले, कचरा बीनने वाले बच्चों को पढ़ा कर उनका जीवन संवारने का प्रयास करने लगी। लेखिका ने बताया है कि वह स्वरोजगार स्थापित करके अपने को स्वावलंबी बनाने की इच्छुक है। यद्यपि उसे अभी अपना गंतव्य दूर लग रहा है तथापि वह आश्वस्त है कि एक दिन समाज यह समझ जाएगा कि किन्नर केवल नाचना, गाना या देह व्यापार ही नहीं कर सकते बल्कि "किन्नर सबसे पहले एक इंसान हैं हमको अवसर मिले तो पढ़-लिखकर रोज़गार कर सकते हैं।

किन्नर भी बहुत कुछ बन सकता है। उसको तलाश है तो सिर्फ अपनेपन की। उन हाथों की जो आगे आकर कहें यह हिंजड़ा नहीं - मेरा बेटा या बेटी है। ऐसा कोई मिल जाए तो हम अपना भाग्य संवार सकते हैं।"7

साहित्यिक गोष्ठियों में विचार-विमर्श तथा किन्नरों के जीवन, मान्यताओं, समस्याओं और उनके संभावित समाधान के ऊपर इतना कहा-लिखा जा चुका है कि प्रायः अब कुछ और अकहा शेष नहीं रहा है। विवेच्य कृति में किन्नर समुदाय में प्रचलित 'निर्वाण' और 'गोदभराई 'की प्रथाओं का उल्लेख प्रायः अन्य रचनाओं में उपलब्ध नहीं है। किन्नर सिमरन को इनका पालन करना पड़ा जिसका विस्तृत उल्लेख उसने बहुत रोचक ढंग से किया है।

"हमारे किन्नर समाज में निर्वाण का संस्कार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह एक ऐसा संस्कार है जिसमें हमें पूर्ण रूप से स्त्री बना दिया जाता है। इस क्रिया को कहीं-कहीं छिबरना भी कहते हैं। पहले यह क्रिया दाईयां करती थीं जो किन्नर ही होती थीं। बिना किसी दवाई और सुई के इस क्रिया को अंजाम दिया जाता था। अब इस क्रिया को डॉक्टर करने लगे हैं। एनस्थेशिया के बाद डॉक्टर ऑप्रेशन से इस क्रिया को पूर्ण करता है। डॉक्टरों से करवाने में खर्चा आता है। इस खर्च को वह किन्नर चुकाता है जो अपने नाम पर दूसरे किन्नर को चेला बनाता है।"8

इसी प्रकार गोद भराई की रस्म का उल्लेख भी विस्तृत "किन्नर समाज में 'गोद भराई' एक ऐसा संस्कार है जिसमें बहुचरा माता की उपासना की जाती है और कलश भरा जाता है। उस हिंजड़ा का भगवान से विवाह होता है जिसकी गोदभराई की जा रही है या गोदभराई की जाएगी। उसे दुल्हन की तरह सजाया जाता है। पूरे सोलह श्रृंगार किए जाते हैं।"9

प्रातः उठकर गुरु की चरण वंदना, ढोल मंजीरे को प्रणाम करना, बड़ों के सामने नीचे बैठना, बधाई गाने से पूर्व देवी का गीत गाना, नाचने के साथ गाना आना तथा परस्पर मतभेदों में गुरु के निर्णय का मान्य होना आदि छोटी-छोटी परंपराओं का उल्लेख भी उपन्यास में मिलता है। सिमरन ने यह भी बताया है कि हर प्रदेश के किन्नरों के इष्ट भी अलग-अलग होते हैं जैसे महाराष्ट्र में परशुराम की माता रेणुका देवी (मलम्मा) तथा गुजरात और राजस्थान में बहुचरा देवी की अभ्यर्थना की जाती है। प्रत्येक किन्नर के लिए जीवन में एक बार बहुचरा देवी का कलश भरना अनिवार्य होता है। यह स्मरणीय है कि उक्त उल्लेख सिमरन के निजी जीवन से जुड़े प्रसंगों से आए हैं।

उपन्यास में उसके द्वारा जनमानस में किन्नरों के संबंध में व्याप्त भ्रांतियों का निराकरण भी किया गया है यथा मृत्योपरांत उन्हें अर्धरात्रि में घसीटते, उल्टा लटकाकर, झाड़ू या चप्पल से मारते हुए ले जाना, अनजाने स्थान पर कब्र में दफनाने को वे मात्र अफवाह मानती है। उसके अनुसार मृतक किन्नर के धर्म, ओहदे और इच्छानुसार उसका अंतिम संस्कार किया जाता है। अधिकांशतः दफनाए जाने की प्रथा प्रचलित है जिसके लिए भूमि की व्यवस्था किन्नर को अपनी मृत्यु से पूर्व करनी पड़ती है। मृतक की आत्मा को शांति

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
March 2023 Special Issue 08 Volume I SJIF Impact- 5.67

मिले इसलिए रोते नहीं और तेरहवीं आदि संस्कार भी नहीं किए जाते, केवल तीसरे दिन (तीजा) को भोजन कराया जाता है और मृत्यु के चालीस दिन (चालिसवां) गरीबों को भोजन और मृतक आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है।

किन्नरों के उद्दंड, झगड़ा फसाद करने तथा अपेक्षित नेग ना मिलने पर अश्लीलता पर उतर आने की भ्रांति होने से भी सामान्य जनता इनसे कतराती है। वस्तुतः जैसे एक पुरुष या नारी के पथभ्रष्ट होने या दुराचारी होने पर संपूर्ण नारी या पुरुष वर्ग को दोषी नहीं ठहराया जा सकता उसी प्रकार किन्नरों में भी अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के किन्नर होते हैं। सबको एक ही लाठी से नहीं हांका जा सकता।

कथा कथक सिमरन के जीवन के उतार-चढ़ावों के साथ कथा आगे बढ़ती जाती है। प्रत्येक प्रसंग उसके अंतर्मन में कुलबुलाते अस्तित्व की तलाश को कुरेदते और गहराते जाते हैं और सारे किन्नर वर्ग से जुड़कर उनकी व्यथा, तिरस्कृत बहिष्कृत, अभावजन्य जीवन को अभिव्यंजित करते हैं।

उपन्यास की भाषा एक सामान्य स्तर के शिक्षित की सामान्य भाषा है। आनंदानुभूति, अंतरात्मा, बहिष्कार, दुष्टात्मा जैसे कहीं-कहीं प्रयुक्त शब्द भी भाषा को गरिमा प्रदान करने में अक्षम हैं। उर्दू के शब्द अपेक्षाकृत अधिक प्रयुक्त हुए हैं यथा जन्नत, ख्याल, मज़बूर, फरिश्ता, ज़ेहन, बुखार, खामोश, खामियाज़ा, मर्दानगी, हौसले, मकसद इत्यादि। समाज में व्यक्तियों द्वारा सामान्यतः प्रयुक्त स्टील फैक्ट्री, कंपनी, नेल पेंट, सैक्स ट्रांसजेंडर, लेस्बियन रिपोर्ट, रेलवे स्टेशन आदि शब्द भाषा में घुले-मिले हैं। जल ही जीवन है, भूखे पेट भजन नहिं होत गोपाला जैसी उक्तियाँ तथा आग बबूला होना, ठेका ना लेना, मवाली छाप, फूटी आंख न सुहाना, बखिया उधेड़ना, शातिर खिलाड़ी होना, तिल का ताड़ बनाना, घर सिर पर उठाना, सिर पर छत न होना आदि मुहावरे यथास्थान प्रयुक्त हुए हैं किन्तु इनसे भाषा को अतिरिक्त समृद्धि नहीं मिली है। कृति के अंतिम अंश में देवी का गीत पूरा उद्धृतकहीं-कहीं पात्रानुसार भाषा का रूप बदला है जैसे बेला किन्नर और बलिया की किन्नर गुरु की बोली में तल्खी और कड़क है जो उनके व्यवसाय के अनुरूप है। सिमरन को पतली आवाज़ में गाते सुनकर बलिया की किन्नर गुरु उसे डपटते हुए कहती हैं- "हे मरजानी तू औरत नहीं है, एक हिजड़ा है। क्या धीमी, पतली आवाज़ से गा रही है। हिजड़ा हो तो हिजड़ों के जैसी रहो। समझी।"10

दुर्दिन में सिमरन को संरक्षण देने वाली पंजाबिन की भाषा कहीं सामान्य व्यवहार की है तो अन्यत्र 'पुतर' जैसे शब्दों का प्रयोग उसके पंजाबी होने की साक्षी देता है। कंपनी में काम करते हुए सिमरन का संपर्कागत समलैंगिक बॉबी स्वयं तो रुक्ष है ही वह सिमरन को भी भद्रभाषा का प्रयोग करने से रोकता है तथा 'आप' और 'जी' के स्थान पर 'तू' कहने की सम्मति देता है क्योंकि उसे विश्वास है कि इस वर्ग को इज्जतदार बनकर भी समाज की प्रताड़णा ही मिलती है। फायदा बेशर्म बनने में ही है। अंत तक सिमरन की अस्तित्व की तलाश पूरी नहीं होती और वह उसका समाधान खोजने का दायित्व पाठकों पर छोड़ देती है। हिजड़े से हिजड़े पैदा नहीं होते। यह सभ्य समाज की देन है। हम स्त्री और पुरुष से ही पैदा होते हैं बस वह हमको अपना नहीं पाते और त्याग देते हैं। ऐसा क्यों। डॉ मोनिका देवी ने सिमरन की इस हकीकत को अपने शब्दों में पिरोकार साहित्य जगत को एक अनमोल खजाना सौंप दिया हैं किन्नर विमर्श पर आधारित यह रचना पाठको को सोचने पर मजबूर करती हैं कि दर्द सहकर भी सिमरन आज अपना अस्तित्व तलाश चुकी हैं वह एक सामान्य जीवन यापन कर रही हैं

संदर्भ सूची

1. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,23
2. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,93
3. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,97
4. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,102
5. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,103
6. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,93
7. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,100
8. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,66-67
9. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ. सं,75
10. डॉ मोनिका देवी -अस्तित्व की तलाश में सिमरन, 1पृ. सं,93